RAS MAINS TEST SERIES 2018

MODEL ANSKEY

PAPER-IV GENERAL **HINDI** & GENERAL ENGLISH

1. निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक दीजिए तथा लगभग एक–तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए :
अंक : 2 + 8 = 10

ध्यान कर्म का निषेध नहीं हैं अपितु पूर्ण और ..... से बहने वाली करुणा और आनन्द है।

उत्तर :– शीर्षक :– 'ध्यान और कर्म'

संक्षिप्तीकरण :– ध्यान कर्म का विरोधी नहीं, अवलम्ब हैं। दोनों एक दूसरें के पूरक हैं। ध्यान स्व का परिचायक है तथा कर्म संसार में प्रेम की स्थापना करता ह। मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में बुद्धि और हृदय जो कि ध्यान और कर्म के ही धारक हैं, सहायक सिद्ध होते हैं।

2. निम्नलिखित सूक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए विस्तार कीजिये। (**शब्द सीमा** : लगभग **100** शब्द)
अंक 10

अबला जीवन ! हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

उत्तर :– इस पुरूष–प्रधान भारतीय समाज में नारी शक्तिरूपा मानी जाती है, और वह है भी। किन्तु वह 'अबला के रूप में मानी गई हैं। उसके जीवन की कहानी विडंबनापूर्ण है। उस कहानी के कथानक की मुख्य रूप से दो घटनाएँ हैं। वह ओर अपने आँचल में दूध रखती है, अर्थात् इस मानवता का पोषण करती है अपने तन–मन से मानव संस्कृति का संवर्द्धन करती है, और इसीलिए तो नारी संस्कृति का पलना है, संस्कृति उसकी कोख में पलती है। किन्तु नारी–जीवन की कहानी का दुसरा पक्ष त्रासद है। नारी के इस त्यागमय जीवन के बदले समाज उसे पीड़ित करता है, लांछित और प्रताड़ित करता है। वह बचपन में पिता के अधीन दहेज के लिए जताई जाती है,बलात्कार की शिकार बनाई जाती हैः वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन आधारभूत आवश्यकताओं के लिए प्रताड़ित की जाती है। समाज उसके दुध के अवदान के बदले आँखों मे आँसू देता है। इसीलिए मैथिलीशरण गुप्त ने नारियों की विडंबनीय स्थिति को इन मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया हैं।

आधुनिक युग में स्त्री–पुरूष की समानता की चेतना के प्रसार ने नारी की मध्यकालीन एवं सामंतकालीन स्थिति को बदला है, अब वह बुर्के तथा पर्दे से बाहर आने लगी हैं। किन्तु उक्त पंक्तियों के लिखे जाने के बाद लगभग छह दशक गुजर गए है इसके बावजूद भारतीय समाज में नारी की विंडबनीय स्थिति में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया है और इसलिए यह उक्ति आज भी कमोबेश चरितार्थ हो ही रही है।

3. सचिव, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर की ओर से निदेशक, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग, जयपुर को पंचायतीराज में जिलेवार रिक्त पदों को सूची मंगवानें हेतु पत्र लिखिए। **अंक 10**

उत्तर :–

राजस्थान सरकार
पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग
शासन सचिवालय, जयपुर

प.क्र. 3(ग)/पं.ग्र.वि.वि./6/आदेश/18/786 दिंनाक 15 सितम्बर 2018

निदेशक
पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग
जयपुर

विषयः– रिक्त पदों की सूची प्रेषणार्थ।

मान्यवर,

राज्य सरकार के आदेश प.क्र. 12(1) प्रसुवि/आज्ञा/18/222, दिनांक 21 अगस्त 2018 के माध्यम से सरकार द्वारा पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग में जिला, पंचायत व ग्राम स्तर पर सभी प्रकार

के रिक्त पदों की सूची प्रेषित करने को कहाँ गया है। उक्त आदेश की अनुपालनार्थ संदर्भित सूची जिलेवार तैयार करवा कर चार प्रतियों में पूर्ण विवरण सहित विभाग को प्रेषित करें।

पत्र को प्राथमिकता दें।

हस्ताक्षर
क ख ग
सचिव

प.क्र. 3(ग)/पं.ग्र.वि.वि./6/आदेश/18/787–790 दिंनाक– 15 सितम्बर 2018

प्रतिलिपि अग्रलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित–
(1) सचिव, पंचायतीराज मंत्री महोदय, राजस्थान सरकार।
(2) निजी सचिव, मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार
(3) निजी सचिव, सचिव, प्रशासनिक सुधार विभाग, राजस्थान सरकार।
(4) रक्षित पत्रावली।

हस्ताक्षर
क ख ग
सचिव

4. राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव की ओर से सभी विभागाध्यक्षों को प्रशासनिक व्यय में कमी करने के उपायों को सख्ती से लागू करने के निर्देश देते एक 'परिपत्र' का प्रारूप प्रस्तुत करें। अंक 10

उत्तर :–

राजस्थान सरकार
शासन सचिवालय
जयपुर (राज.)

प.क्र. क(24)/शास./सामा./2018/124 दिंनाक– 14 सितम्बर 2018

परिपत्र

समस्त विभागाध्यक्ष

विषय :– प्रशासनिक व्यय में कमी करने बाबत्।

राज्य सरकार के आदेशानुसार मुझे यह सूचित करने का आदेश प्राप्त हुआ है कि समय–समय पर की गई ऑडिट के माध्यम से पता चला है कि विभागों द्वारा अंवाछित मदों में भी प्रशासनिक व्यय किया जाता रहा हैं। इन मदों पर व्यय से सरकार के राजस्व में हानि हो रही है जिन पर रोक लगाना अत्यावश्यक प्रतीत हो रहा हैं।

अतः आप सभी विभागाध्यक्षों कों निर्देशित किया जाता है कि प्रशासनिक व्यय में कमी करनें के उपायों को सख्ती से लागू करें और साथ ही अपने अधीनस्थ विभागों व कार्यलयाधिकारियों में उक्त परिपत्र की विषय–वस्तु को लागू कराने का प्रबंध करें।

हस्ताक्षर
क ख ग
सचिव
जयपुर

प.क्र. क(24)/शास./सामा./2018/124–130 दिंनाक– 14 सितम्बर 2018

प्रतिलिपिः– निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित–

(1) शासन सचिव, जयपुर
(2) अपर शासन सचिव, जयपुर
(3) रक्षित पत्रावली

हस्ताक्षर
क ख ग
मुख्य सचिव
जयपुर

5. राजकीय महाविद्यालय भीलवाडा में अखिल राजस्थान स्तर की हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इस महाविद्यालय के पाचार्य की ओर से राजकीय महाविद्यालय चूरू को एक अर्द्धशासकीय पत्र लिखिए जिसमें उनसे योग्य छात्रों की एक टीम भेजने का अनुरोध हो। अंक 10

उत्तर :–

राजस्थान सरकार
कार्यालय :–राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा
जयपुर (राज.)

क ख ग
प्राचार्य

राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा
दिंनाक– 14 सितम्बर 2018
अ.शा.प. क्र. 8(क)/रा.म.भी./प्रा/2018

प्रिय श्री चछज

मैं आपका ध्यान राज्य सरकार के आदेश क्र. 8(क)रा.मा.भी./प्रा./2018/128 दिनांक 14 सितं. 2018 की और दिलाना चाहूँगा। कि राजकीय महाविद्यालय,भीलवाड़ा में अखिल राजस्थान स्तर की हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 15 सितम्बर, 2018 को रखा गया है । अतः आप अपने महाविद्यालय के योग्य छात्रों की टीम बनाकर उन्हें यहाँ भेजने का कष्ट करावें। विद्यार्थियों के लिए सारी व्यवस्था हमारें महाविद्यालय द्वारा कर दी जावेगी।

इससे संबधित कोई भी शंका हो तो आप मुझे निस्संकोच बताए। आपकी समस्या का समाधान मैं व्यक्तिशः करने का प्रयास करूंगा।

शुभकामनाओं सहित!

शुभेच्छु
क ख ग
प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय
भीलवाड़ा

श्री चछज
राजकीय महाविद्यालय
चुरू (राज.)।

टिप्पणी :– उपर्युक्त अद्धसरकारी–पत्र में रेखाकिंत शब्द पत्र–लेखक द्वारा स्वयं हाथ से लिखे जाते है। टंकित नहीं किए जाते।

6. स्वयं को जिला शिक्षा अधिकारी मानते हुए अधीनस्थ संस्थाओं के लिए आवश्यक आवश्यक लेखन तथा अन्य सामग्री की आपूर्ति करने के लिए एक निविदा का प्रारूप तैयार कीजिए। अंक 10

उत्तर :–

राजस्थान सरकार
कार्यालय, जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर

प.क्र. 4(क)/जि.शि.अ./सामा./2018/135 दिंनाक– 14 सितम्बर 2018

निविदा सूचना संख्या – 135/2018

राजस्थान राज्य के राज्यपाल की ओर से इस कार्यालय के अधीन राजस्थान राज्य के राज्यपाल की ओर से इस कार्यालय के अधीन नीचे वर्णित सामान की आपूर्ति के लिए मोहर बंद निविदाएं आंमत्रित की जाती है जो दिनांक 14 सितम्बर,2018 को अपराह्न 2.00 बजे तक प्राप्त की जाकर तथा दिनांक 15 सितम्बर, 2018 को अपराह्न 3.00

बजे तक प्राप्त की जाकर, उसी दिन अपराह्न 3.30 बजे उपस्थित निविदा दाताओं के समस्त खोली जाएगी। सामान के बारे में पूर्ण विवरण किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय में निविदा शुल्क जमा कराकर कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता हैं।

क्र.स.	कार्य/सामग्री विवरण	निविदा शुल्क लागत	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	कार्य
1.	रजिस्टर	500/–	20,000/–	6,000/–	3 माह
2.	लेखन सामग्री	500/–	20,000/–	8,000/–	3 माह

आवश्यक शर्ते :–

1. सशर्त निविदाएं मान्य नहीं होगी।
2. डाक अथवा फैक्स द्वारा प्राप्त निविदाएँ, विलंब से प्राप्त निविदाएं मान्य नहीं होगी।
3. धरोहर राशि बैंक ड्राफ्ट के रूप में ही स्वीकार्य होगी।
4. निविदा परिपत्र शुल्क किसी भी शर्त में लौटाया नहीं जायेगा।
5. बिना कारण बतायें किसी निविदा अथवा समस्त निविदाओं की स्वीकृत अथव अस्वीकृत करने का आधिकार निम्न हस्ताक्षर कर्त्ता के पास सुरक्षित रहेगा।

हस्ताक्षर
क ख ग
जिला शिक्षा अधिकारी
उदयपुर

7. निर्देशक पशुपालन विभाग बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा अधिकारी राजकीय पशु चिकित्सालय, चूरू चिकित्सा संबंधी विवरण भेजने हेतु पूर्व में प्रेषित पत्र का स्मरण दिलाते हुए अनुस्मारक लिखिए। अंक 10

उत्तर :–

राजस्थान सरकार
कार्यालय, निदेशक पशुपालन विभाग, बीकानेर

प.क्र. नि.प.वि./18/अनुस्मारक/112 दिंनाक– 14 सितम्बर 2018

अनुस्मारक

प्रेषक :– निदेशक पशुपालन विभाग बीकानेर
प्रषितिः– पशु चिकित्सा अधिकारी
राजकीय पशु चिकित्सालय, चुरू

विषय :– चिकित्सा संबंधी विवरण भेजने हेतु।
संदर्भ :– हमारे पत्र क्रमांक 5(क) नि.प.वि./आदेश/2018/281
दिनांक 14 सितम्बर, 2018 के संदर्भ में।

हमारे कार्यालय द्वारा पूर्व में प्रेषित पत्र का अवलोकन करो उसका उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है और चिकित्सा संबंधी विवरण को विधानसभा के आगामी सत्र में प्रस्तुत करना है। अतः शीघ्रता शीघ्र मामलें को गंभीरता से लेते हुए सूचना, विवरण को निदेशालय बीकानेर भिजवाने का कार्य करें।
संलग्न :– पूर्व में प्रेषित पत्र की छायाप्रति

हस्ताक्षर
क ख ग
निदेशक पशुपालन विभाग
बीकानेर (राज.)

8. दिए हुए अंग्रेजी अनुच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :(शब्द सीमा : लगभग 75 शब्द) अंक 10

It will generally be found that those who know what it is to have been in need and destitution are very .....than he could live without air.

उत्तर :– सामान्यतः देखा गया है कि जिन लोगों ने गरीबी और आर्थिक अभावों को देखा है, वे गरीबी को दूर से देखने वालों की तुलना में परिस्थितियों से प्रायः कम घबराते है, तथा स्वभाव से अधिक खर्चीलेपन की और झुके हुए होते है। वे लोग जो संपन्न स्थितियों में जन्में और पले हो, वे उन लोगों की तुलना में जिन्हें अकस्मात् सौभाग्य से धन–प्राप्ति हुई हो, कहीं अधिक अपने भविष्य के लिए सावधान तथा मितव्ययी होते है। ऐसा लगता है कि गरीबी अपने आप में इतनी घटिया और अंसंतोषप्रद नहीं होती, जितनी कि वह दूर से दिखती है। वास्तविक कारण तो यह तथ्य है कि जो व्यक्ति समृद्ध परिस्थितियों में जन्मा ह, वह इस परिस्थितियों के बिना वैसे ही रहने की कल्पना नहीं कर सकता, जैसे कि बिना वायु के जीवित रहना।

Part-C Marks : 20

निम्नांकित विषयों पर एक निबंध लिखिए : (शब्द सीमा **250** शब्द)

(i) उत्तर :–

विषय : खेलों की दुनिया में भारत एक उभरती महाशक्ति के रूप में

''खेल चरित्र का निर्माण नहीं करते, वे इसे प्रकट करते हैं।'' अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में अच्छा प्रदर्शन कवल पदक जीतने तक सीमित नहीं होता वरन् यह किसी राष्ट्र के स्वास्थ्य, मानसिक अवस्था व लक्ष्य के लिए प्रतिबद्धता को सूचित करता है। किसी राष्ट्र की प्रतिष्ठा खेलों में उसकी उत्कृष्टता से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है।

खेल जगत में हाल ही के कुछ वर्ष भारतीय खेल विकास की गति को इंगित करते हैं। राष्ट्रमण्डल खेलों, एशियाई खेलों समेत अन्य प्रतिष्ठित प्रतिस्पर्धाओं में भारत का प्रदर्शन खेलों की बदलती दिशा व दशा का साक्ष्य है। चाहे क्रिकेट हो या बैडमिन्टन या बन्द कमरे में दिमागी कसरत वाला खेल शतरंज, भारत ने गत वर्षों में विशेष उपलब्धियाँ हासिल की है।

विश्वनाथ आनन्द पाँच बार विश्व विजेता बन शतरंज की दुनिया में अपना नाम कर चुके है। बिलियर्ड व स्नूकर जैसे खेल में पंकज आडवानी युवा चैम्पियन रह चुके है। निशानेबाजी में अभिनव बिन्द्रा जैसे अनुभवी खिलाड़ी के साथ–साथ मनु भाकर, अपूर्वी चन्देला जैसे नवोदित भी अपने कौशल का लौहा मनवा रहे हैं।

टेनिस में लिएण्डर पेस, महेश भूपति, सानिया मिर्जा तो कुश्ती–मुक्केबाजी में विजेन्दर सिंह, सुशील कुमार, मरीकोम, साक्षी मलिक, गीता फोगाट, बबीता फोगाट जैसे सितारों की सूची का अन्त ही नहीं है। दीपिका पल्लीकल व जोशना चिनप्पा ने किदांबी श्रीकांत, साइना नेहवाल, पी. वी. सिन्धु ने बैडमिन्टन, दीपा कर्माकर ने जिमनास्ट, दुती चन्द व हिमा दास ने दौड़ व मीरा बाई चानु ने भारोत्तोलन जैसे खेलों में देश को मेडल में नवाजा है। कहना न होगा, क्रिकेट व कबड्डी में भारत सिरमौर रहा है।

विभिन्न प्रतिस्पर्धाओ में महिलाओं के उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ–साथ पैरा–एथलेटिक्स में भी देश का झण्ड़ा विश्व के खेल मानचित्र पर लहराया है। इस सन्दर्भ में मरियप्पन थंगावेलु (ऊँची कूद), दीपा मलिक (शोटपुट), देवेन्द्र झाझड़िया (भाला फेंक) जैसे नाम स्वतः स्मरण हो आते हैं।

अन्तर्राष्टोय स्तर पर खेलों में भारत का प्रदर्शन योजनाबद्ध तरीके से की गई तैयारियों व खिलाड़ियों की बदलती मानसिकता का परिणाम है। अगले तीन ओलम्पिक खेलों में प्रभावी प्रदर्शन हेतु गठित ओलम्पिक टास्क फोर्स, विशेष एथलीटो को मासिक रु. 50,000, दिव्यांग एथलीटों हेतु गाँधीनगर में प्रशिक्षण केन्द्र, खेल प्रतिभाओं की खोज हेतु 'खोजबीन' पोर्टल, खेलों इण्डिया कार्यक्रम, ग्रामीण खेलों के आयोजन जैसे प्रयास निश्चित ही भारत की खेलों में स्थिति को अधिक सुदृढ़ बनाएंगे इस दिशा में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। जिन खेलों से राजनीति का पृथक्करण, बुनियादी सुविधाओं का विस्तार, तकनीक का बेहतर प्रयोग, स्पोर्टस का अनुकूलतम उपयोग, भारत की खेल संस्कृति को और अधिक सकारात्मक बनाने हेतु आवश्यक है।

स्वर्ण पदक वास्तव में सोने से नहीं बने होते, वे पसीने, दृढ़ संकल्प व कड़ी मेहनत के मिश्रण से निर्मित होते हैं। भारत में खेलों की डोर यदि सही दिशा में रही तो इस पतंग को ऊँची उडान भर कर खेल महाशक्ति के रूप में स्थापित होने से कोई नहीं रोक सकता।

(ii) उत्तर :–

विषय : समलैंगिकता–अपराध या जीवन जीने का अधिकार

भारतोय समाज में समलैंगिकता की उपस्थिति का अंदाजा खजुराहों के शिल्प से लगाया जा सकता है, हालांकि भारतीय समाज ने कभी भी खुले तौर पर समलैंगिकता को स्वीकार नहीं किया। समलैंगिकता का आशय समान लिंगके प्रति

यौन उन्मुखीकरण से है। पुरुष समलिंगी, महिला समलिंगी, उभयलिंगी व लिंग परिवर्तित व्यक्तियों के समूह को सम्मिलित रूप से 'एलजीबीटी' समुदाय कहते हैं।

भारत में समलैंगिकता को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 377 के तहत् ब्रिटिश काल म अपराध घोषित किया गया था, तब से लेकर यह विषय विवादास्पद रहा है। इस संबंध में वर्ष 2009 व 2013 में न्यायालयों द्वारा भिन्न–भिन्न मत दिये गये। समलैंगिकता अपराध है अथवा अधिकार यह निर्णित करने से पूर्व इसके लिए उत्तरदायी कारकों व संभावित उपचारों पर विचार करना आवश्यक है।

समलैंगिकता के कारण अभी पूर्णतः स्पष्ट नहीं है, परन्तु आनुवांशिकी, गर्भावस्था के समय हार्मोन का प्रभाव व वातावरण इसके कारक माने गये है। अतः यह स्पष्ट है कि सभी कारक प्राकृतिक है व स्वयं व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर है। कई समुदाय है जो इसके उपचार हेतु 'रिपैरेटिव चिकित्सा का सुझाव देते है परन्तु अधिकांश चिकित्सकों का मत है कि किसी भी उपाय से किसी व्यक्ति की लिंग प्राथमिकता परिवर्तित नहीं की जा सकती।

नैतिकता व संस्कृति का हवाला देकर किसी के मूल अधिकारों, निजी स्वतंत्रता व प्राकृतिक आवश्यकता का हनन नहीं किया जा सकता। समलैंगिकता को अविधिमान्य बनाने वाले ब्रिटिश स्वयं इसे 1967 में ही अपराध की श्रेणी से हटा चुके है। विश्व के कई देशा में इन्हें विवाह के समान अधिकार दिये गये है व कई अन्य देशों में 'घरेलु भागीदारी' जैसे प्रावधान किये गये है। विधि आयोग की 172वीं रिपोर्ट में इसे अपराध न मानने का सुझाव दिया गया है।

2017 में योग्यकार्य सिद्धान्तों जो कि मानवाधिकार से संबंधित है, इनमें विस्तार कर लिंग अभिव्यक्ति, लैंगिक लक्षणों व यौन उन्मुखीकरण को सम्मिलित कर समूचे विश्व में समलैंगिकों के आत्मसम्मान को सुरक्षित रखने का मार्ग प्रशस्त किया। इसी के हवाले से हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने दो वयस्कों के मध्य सहमति से बनने वाले समलैंगिक सम्बन्धों को दण्डनीय अपराध की श्रेणी से निकाल दिया है जो स्वागत योग्य निर्णय है।

अन्त में यह कहना उचित होगा कि समलैंगिकता पथभ्रष्टता व विलासिता का मापदण्ड नहीं वरन् प्राकृतिक गुणधर्म है। अतः समलैंगिकों को भी सामान्य जीवन जीने का अधिकार है व एक संवेदनशील नागरिक होने के नाते हमें इनके 'चयन का अधिकार व निजता के अधिकार' का सम्मान करना चाहिए।

(iii) उत्तर :–

विषय : नई वैश्विक व्यवस्था में भारत का उभरता स्थान

वैश्विक परिदृश्य सदैव से ही गतिशील प्रकृति का रहा है। वैश्विक व्यवस्था में वैश्वीकरण, बहुध्रुवीयता, नयेशक्ति केन्द्रों के उदय, मानवाधिकार संरक्षण, सामुहिक सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण जैसे तत्वों के समावेश से विश्व के संचालन में भारत की महत्ती भूमिका हो गई है।

अब वैश्विक संबंधों का निर्धारण अर्थव्यवस्था को केन्द्र में रख कर होता है, इस कारण भारत का बड़ा बाजार विश्व के सभी देशों को आकर्षित कर रहा है। सर्वाधिक विकास दर व सकल घरेलु उत्पाद के वृहद आकार के चलते निवेशकों की प्राथमिकता बना हुआ है। वैश्विक मंदी के काल में मजबूती से खड़ी रही अर्थव्यवस्था ने भारत की प्रामाणिकता में वृद्धि की है। सेवा क्षेत्र में भारत का कोई निकटतम प्रतिद्वन्द्वी नहीं है।

वर्तमान में शक्ति संतुलन सापेक्ष रूप से एशिया की ओर झुका प्रतीत होता है। इस सन्दर्भ में विश्व के अन्य देशों द्वारा भारत को चीन के प्रतिसन्तुलन के रूप मेंदेखा जा रहा है। अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना के पलायन के बाद उत्पन्न शक्ति शून्यता को भारत ने बखूबी भरने का प्रयास किया है। इसी प्रकार पश्चिमी एशिया में अरब गुट व इजराल दोनों के मध्य संतुलन बनाये रखने में भारत सफल रहा है। भारत के सहयोग से पड़ौसी राष्ट्रों में परियोजनाओं का क्रियान्वयन, दक्षिण एशियाई देशों हेतु नौवहन प्रणाली की स्थापना जैसें कदम भारत को क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करते हैं।

भारत ने प्रशंसनीय रूप से तृतीय विश्व के देशों को नेतृत्व प्रदान किया है। गुट निरपेक्षता के सिद्धान्त से प्रारंभ यह संबंध विश्व व्यापार संगठन में विकासशील देशों के हितों के संरक्षण से अधिक प्रगाढ़ हुआ है। भारत ने घाना, नाइजीरिया समेत कई अफ्रीकी देशों के विकास हेतु आधारभूत संरचना के स्तर को ऊँचा उठाने हेतु प्रतिबद्धता दिखाई है। ब्रिक्स, सार्क व बिम्सटेक जैसे संगठनों के गठन से विश्व में वैकल्पिक व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया है।

पर्यावरण संरक्षण व ऊर्जा के गैर परम्परागत स्त्रोत के विकास की दिशा में एक ओर जहाँ भारत जलवायु परिवर्तन से संबंधित पेरिस समझौते को लागू करवाने हेतु प्रयासरत रहा वहीं दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय सोर गठबन्धन का प्रणेता बन विश्व के जिम्मेदारकर्ता की भूमिका निभाई।

इसरों द्वारा भारत समेत अन्य राष्ट्रों के 104 रॉकेटों के एक साथ प्रक्षेपण के रिकार्ड ने भारत को वैश्विक पटल पर विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणीय राष्ट्रों में सम्मिलित कर दिया। मंगल मिशन की सफलता ने इसमें चार चाँद लगा दिये। 2022 में होने वाले अंतरिक्ष मिशन से भारत फिर एक बार अपना विज्ञान कौशल सत्यापित करेगा।

चीन का बढ़ता प्रभुत्व व भारत का घेराव, पड़ौसी राष्ट्रों से सहयोग में कमी, संरक्षणवाद, व्यापार युद्ध, आतंकवाद, शरणार्थी समस्या जैसे मुद्दे भारत के लिए चिन्ता का विषय है। विश्व स्तर पर वर्चस्व के संघर्ष में चुनौतियाँ तो आयेगी ही परन्तु कई अवसर भी प्राप्त होंगे।

विश्व में भविष्य में होने वाले परिवर्तनों का सटीक अनुमान लगाकर यदि भारत उसी अनुरूप अपना क्षमतावर्धन करता रहे, तो निश्चित ही भारत वैश्विक व्यवस्था का महत्वपूर्ण संचालक बना रहेगा।